

केजुधल लेबरर्स के बारे में भी हमें वर्द है। केजुधल लेबरर और टेम्पेरां लेबरर जो कि 5-20 साल से चले आ रहे हैं उनको भी प्रोटेक्शन देने के बारे में हम कुछ करने वाले हैं। कांटेक्ट लेबरर सिस्टम को भी हम आवालिश करने की सोच रहे हैं। हिन्दुस्तान का जो मजदूर है उसको पूरे तरीके से प्रोटेक्शन देने के लिए हम सोच रहे हैं। इस सोचने में आप वायलेंस की बात कहां से ले आये? पूरी कांफ्रेंस की बात को आपने देखा होगा और उसको देखते हुए वायलेंस की बात करना ठीक नहीं है।

कांफ्रेंस में जो डिस्मिशन ले लिये गये हैं, लेबर मिनिस्टर्स ने जो डिस्मिशन लिये हैं उन डिस्मिजनों पर कानून पार्लियामेंट में बहुत जल्दी आने वाला है। ऐसा तो नहीं कि प्रिन्टिंग प्रेस में दे कर ही यहां कानून आ जाएगा। कानून जो बताता है उसके लिए स्टेट गवर्नमेंट से भी हमें बात करनी है। स्टेट गवर्नमेंट से हम बातचीत कर रहे हैं और तमाम चीजों की हम कोशिश कर रहे हैं। आप हमारी मदद करने के बजाय, हमारी सपोर्ट करने के बजाय वायलेंस के बारे में बात करते हैं। अगर बोम्बे में वायलेंस होगा तो आप भी वहां से भाग जाएंगे, आपकी यूनिशन भी वहां से भागने वाली है। फिर आप सेंटर से कहेंगे कि हमें शेल्टर दो। इस तरह से आपने जो बात छेड़ो है वह ठीक नहीं है। मैं समझता हूँ कि श्रीमती इन्दिरा गांधी की प्राइम मिनिस्टर-शिप में मजदूरों के लिए हमारे कदम आगे बढ़ेंगे और उन्हीं कदमों के अन्तर्गत हम लेबरलाज में काफ़ी तब्दीली लाने की कोशिश कर रहे हैं।

श्री रामावतार शास्त्री : के बारे में आपने कुछ नहीं कहा।

श्री टी० अंग्रव्या : किसी भी चीज के बारे में आपके बोलने की जरूरत नहीं होगी। वह भी हम कर रहे हैं, उसका भी हमें पता है।

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

SIXTH REPORT

SHRI BHEEKHABHAI (Banswara):
Sir, I beg to present the Sixth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions.

COMMITTEE ON ABSENCE OF MEMBERS

FIRST REPORT

SHRI XAVIER ARAKAL (Ernakulam): Sir, I beg to present the First Report of the Committee on Absence of Members from the Sittings of the House.

12.39 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) NEED FOR PREFERENCE IN EMPLOYMENT TO LOCAL PERSONS IN MATHURA OIL REFINERY.

श्री दिगम्बर सिंह (मथुरा) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं नियम 377 के अधीन सूचना देते हुए निवेदन करना चाहता हूँ कि तेल शोधक कारखाने मथुरा (उ० प्र०) के अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर जनता में गहरा असन्तोष है। वहां की जनता को शिकायत है कि जब तेल शोधक कारखाने की स्थापना हुई थी तो मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश और माननीय प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने मथुरा में बहू सभा में घोषणा की थी कि इस कारखाने से देश का हिा होगा ही, मथुरा और उत्तर प्रदेश के लोगों को भी काम मिलेगा, बेकारी दूर होगी। जिनकी भूमि जा रही है उनको काम देने में प्राथमिकता दी जायेगी।

अब जनता की शिकायत है कि नौकरी और ठेका अधिकतर बाहर के आदमियों को ही मिल रहे हैं। मथुरा नगरी में बाहर के लोग आकर बसने लगे हैं जिनकी भूमि गई उनको नौकरियों में प्राथमिकता नहीं दी गई और मथुरा जिले और उत्तर प्रदेश के लोगों को भी प्राथमिकता नहीं दी गई। कारखाने के अधिकारी जो अधिकतर अन्य प्रदेशों के हैं वे अपने क्षेत्र के आदमियों को ही प्राथमिकता देते हैं। इसलिए जनता आन्दोलन कर रही है। अनेक बार लोगों ने आमरण अनशन किए हैं। लिखकर मंत्री जी से शिकायत की है। अब जनता में गहरा असन्तोष है और सत्याग्रह की सम्भावना है। वहां जो सामान कारखाने में प्रयोग हो रहा है उसके सम्बन्ध में आम धारणा है कि घटिया किस्म का है। नौकरियों के सम्बन्ध में आम धारणा है कि उनका नीलाम होता है।

माननीय मंत्री जी वहां जाते हैं तो वहां के संसद् सदस्य तक को पता नहीं लगता। यदि इस ओर सरकार शीघ्र ध्यान नहीं देगी तो वहां बहुत बड़े पैमाने पर आन्दोलन होने की सम्भावना है और कारखाने की प्रगति में बाधा पड़ेगी।

[श्री दिगम्बर सिंह]

जनता कहती है कि भूमि मथुरा की गई, मथुरा जिले की जनता को हानि होगी, स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा, यमुना का पानी गन्दा होगा। गहरे ट्यूबवैल कारखाने के बास्ते नीचे से पानी निकालेंगे। उससे मथुरा के किसानों के नलकूपों के लिए पानी नहीं रहेगा। ताजमहल को हानि पहुंचेगी। भरतपुर में देश का सब से महत्वपूर्ण पक्षी बिहार (घना) में पक्षी नहीं आएंगे। अनेक बाहर के लोग मथुरा में आकर बस जायेंगे। हानि होगी मथुरा और मथुरा के आसपास की जनता की और लाभ उठावेंगे बाहर के लोग। पैट्रोलियम मंत्रालय के माननीय मंत्री जी से मेरा निवेदन है कि अविलम्ब उचित कार्रवाई करे और जनता में विश्वास पैदा करे ताकि अधिक असन्तोष न फैले। कृष्ण भगवान की पवित्र भूमि में जो लोग देश और विदेश से आते हैं, उनका स्वागत होता है। किन्तु इस असन्तोष के कारण ऐसा न हो कि जिस प्रकार कृष्ण भगवान ने कम के खिलाफ आन्दोलन किया था, ब्रजवासियों को भी उसी प्रकार इस असन्तोष के कारण वैसा ही आन्दोलन करना पड़े।

(ii) NEED FOR IMMEDIATE SUPPLY OF FOODGRAINS TO UTTAR PRADESH FOR "FOOD FOR WORK" PROGRAMME

श्री जंगल बंशर (गार्जीपुर) से नियम 377 के अधीन लोक महत्व के एक श्वेत को उठाना चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि कृषि मंत्री जी इस सम्बन्ध में एक वक्तव्य देंगे।

इस समय पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न न पहुंचाए जाने के कारण उत्तर प्रदेश के वाराणसी, गोरखपुर, इलाहाबाद, फैजाबाद और झांसी मंडलों में काम के बदले अनाज योजना के अन्तर्गत चलाए जा रहे सभी कार्य ठप्प हो गए हैं। वैसे तो उत्तर प्रदेश में खाद्यान्न के मामले में मांग और आपूर्ति में बराबर अन्तर रहा है परन्तु इस समय यदि अन्तर बाकी रखा गया तो आने वाले महीने के लिए उत्तर प्रदेश में भयंकर स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। इस जुलाई के महीने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने 97 खाद्यान्न स्पेशलों की मांग की है। इसके विपरीत भारत सरकार ने 64 स्पेशल भेजना मंजूर किया है और जिम रफ्तार से स्पेशल भेजे जा रहे हैं उससे ऐसा लगता है कि इतना भी पहुंच पाना मुश्किल है।

ऐसी स्थिति में मैं केन्द्रीय कृषि मंत्री से अनुरोध करना चाहता हूँ कि वह उत्तर प्रदेश और विशेष कर वाराणसी, गोरखपुर, इलाहाबाद, फैजाबाद और झांसी मंडलों में उत्तर प्रदेश सरकार की मांग के अनुसार शीघ्रतिशीघ्र खाद्यान्न पहुंचाने की व्यवस्था करें। यदि जरा भी विलम्ब किया गया तो भयंकर अकाल से पीड़ित यहां के लोग भूखमरी के कगार पर खड़े हो जायेंगे?

(iii) NEED FOR LEGISLATION TO TAKE OVER AUROVILLE AS A NATIONAL MEMORIAL OF SHRI AUROBINDO.

DR. KARAN SINGH (Udhampur): Under Rule 377, I wish to raise the following matter of public importance:

Several years ago a remarkable project entitled Auroville was started by the Mother of Sri Aurobindo Ashrama of Pondicherry. It was envisaged as a new type of spiritual community where the entire life and activity would revolve around the integral spiritual quest. It included a number of very interesting experimental activities in the field of agriculture, education and community living. As long as the Mother was alive the project continued to grow, but after her death the whole concept has unfortunately become distorted. Endless conflicts have been raging between the Sri Aurobindo Society, which claims exclusive ownership of this vast project, and the 'Aurovillians' who are living there. Unsavoury incidents of violence have also occurred, and there have been grave charges levelled by the two parties against each other. Recently there was again a clash over the Matri Mandir which is supposed to be the spiritual centre of Auroville.

A vast project like Auroville involves extensive acquisition of land in the State of Tamil Nadu and the Union Territory of Pondicherry; numerous visa and passport problems connected with the many foreigners who are living in Auroville, and extensive developmental and administrative dimensions. Clearly all these are far beyond the capacity of the Sri Aurobindo Society to manage, particularly as the President of this Society has himself been accused of numerous misdemeanours.

It is a tragedy that a magnificent concept like Auroville, which has received recognition from UNESCO